आगरा-शास्त्रीपुरम। सेवाकेन्द्र पर वृक्षारोपण के कार्यक्रम में वृक्षारोपण करते हुए चार्टर्ड एकाउण्टेंट शरद पालीवाल, डॉ. राजीव मोदी, ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. रामप्रकाश व अन्य।

जयपुर-अर्जुन नगर। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर आयोजित चैतन्य झाँकी के उद्घाटन अवसर पर समूह चित्र में पार्षद बाबूलाल दतोनिया, बी.जे.पी. वार्ड अध्यक्ष राजकुलदीप जी, डॉ. खुराना, ब्र.कु. गोमती, ब्र.कु. भावना व अन्य।

हरदोई-पिहानी चुंगी। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर लगाई गई झाँकी में बालकृष्ण को भोग खिलाते हुए उपजिलाधिकारी पी.पी. तिवारी। साथ हैं ब्र.कु. मालती, ब्र.कु. कल्पना व ब्र.कु. लवली।

रतिया-हरियाणा। विधायक रविन्दर सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. स्वामीनाथन। साथ हैं ब्र.कु. मदन व ब्र.कु. डॉ. सीमा।

मण्डी गोविंद गढ़-पंजाब। एस.एस.पी. जीतेन्द्र सिंह खैहरा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. साक्षी। साथ हैं ब्र.कु. कविता।

किशनगंज-बिहार। नगरपालिका अध्यक्ष आर्ची देवी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सुमन।

बड़ों के संस्कार से संस्कारित होते बच्चे

गतांक से आगे...

अभी यदि मेरी माँ आकर के मुझे डांट लगाती है, कि तू अपने आप क्यों खड़ा हुआ कहीं लग जाती तो, तब एक भी आँसू नहीं गिरेगा। रोता है, तो माँ आकर के क्या करती है, वह बच्चे को उठा लेती है। कहती है नहीं बेटा.... ये तेरा दोष नहीं है। ये टेबल ही ऐसा है और उस टेबल को एक थप्पड़ मार देती है। ये ज़मीन ही ऐसी है, ये चीज़ ही ऐसी है और उसको थप्पड़ मारती है। तो वो बच्चा शांत हो जाता है और अंदर में मुस्कराता है कि दोष टल गया। माना मैं ज़िम्मेवार नहीं हूँ। वहाँ से इस संस्कार को पक्का कर लेता है कि जीवन में कभी भी कुछ हो जाये ना, तो दोष दूसरों के ऊपर डाल देना है। इसलिए आज भी किसी व्यक्ति से गलती हो जाती है तो वो क्या करता है..? रोता नहीं है, लेकिन चिल्लाना चालू कर देता है। बहुत ज़ोर-ज़ोर से गुस्सा करना शुरु करेगा। ये सेल्फ डिफेंस है। गुस्सा करने वाला व्यक्ति वास्तव में अपना दोष छिपाना चाहता है कि मेरा दोष नहीं है। हाँ, दस लोगों ने गुस्सा करने वाले व्यक्ति को आकर कह दिया कि अच्छा किया आपने उसको पाठ पढ़ाया। तो वह शांत हो जाता है कि दोष टल गया। ज़िंदगी भर हम इसी मनोवृत्ति के साथ जीते हैं। जब कोई नहीं मिलता है दोष डालने के लिए, तो क्या कहते हैं कि भगवान दोषी है। दोष भगवान के ऊपर डाल दिया अर्थात् कभी भी हम वो उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना नहीं चाहते हैं। कितना भय है मनुष्य में, लेकिन क्या उससे वह छूट जायेगा? दोष भगवान के ऊपर डाल देने से क्या वह छूट जायेगा? कभी नहीं। इसलिए कर्म का फल तो भोगना ही पड़ेगा। चाहे उसने भगवान पर दोष डाला अपने मन को सांत्वना देने के लिए कि मैं निर्दोष हूँ। ये समझने के लिए है, लेकिन इससे वो निर्दोष नहीं हो जाता है। इसलिए गीता में भगवान ने अर्जुन से ये बात कही कि हर व्यक्ति जो कर्म करता है, उसके लिए वह खुद ज़िम्मेवार है। इंसान का जब जन्म होता है तो ईश्वर से उसको दो गिफ्ट मिलती है। सबसे पहली गिफ्ट मिलती है, विवेक युक्त बुद्धि। जो सही और गलत को समझ सकती है। आज एक छोटे बच्चे के आगे भी आप झूठ बोलकर के देखो, वो बच्चा तुरंत आप से कहेगा, आपने झूठ बोला ना! लेकिन उस वक्त उसको हम क्या कहते हैं। चुप बैठ, तू समझता नहीं है और जितनी बार हमने उसको कहा चुप बैठ समझता नहीं है तो उतनी बार हमने उसके विवेक को मारा। जब विवेक को ही मार दिया तब वो सोचता है कि यही सच है। झूठ बोलना, यही वास्तविकता है। इसलिए वो भी झूठ बोलना प्रारम्भ करता है। जब वो झूठ बोलता है, तब हम कहते हैं झूठ बोलता है, कहाँ से सीख कर आया है? कहता है आप से ही तो सीखा हूँ। कैसी मनुष्य की विचारधारा है, कैसी उसकी सोच है। अगर कभी-कभी साक्षी होकर के इस दृश्य को देखें ना तो हंसी भी आती है कि मनुष्य कितनी अज्ञानता वश चलकर ही जीवन में कर्म करता है। जबकि भगवान ने उसको विवेक युक्त बुद्धि दी है।

दूसरी गिफ्ट स्वतंत्रता की दी। ये दो गिफ्ट ईश्वर से प्राप्त कर आत्मा इस संसार में आती है। जिस विवेक युक्त बुद्धि से सही क्या है, गलत क्या है, इसको पहचान सकती है। फिर स्वतंत्रता जो उसके पास है, उसके आधार पर क्या करना है, क्या नहीं करना है, उसके लिए वो खुद स्वतंत्र है। उसके लिए कोई ज़िम्मेवार नहीं है।

- क्रमशः

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

दीप आप हैं... - पेज 2 का शेष

हमें बुराई की शरण में जाने से बचा लेते हैं।

समुद्र मंथन द्वारा लक्ष्मी व धन्वन्तरी का अवतरण

साथ ही दीपावली के दिन समुद्र मंथन द्वारा लक्ष्मी व धन्वन्तरी का अवतरण यह सिद्ध करता है कि जो ज्ञान हमें परमात्मा पिता शिव देते हैं, जो श्रीमत वे हमें देते हैं, यदि हम उस श्रीमत पर चलते रहें, उनके दिये हुये अमूल्य ज्ञान रत्नों का मंथन करते रहें तो हम भी श्री लक्ष्मी के समान बन उस आने वाली दीपों से सजी, जगमगाती दुनिया में जाने लायक बन जायेंगे और धन तो क्या वहां कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं होगी। ये सारी प्रकृति, वस्तु, वैभव हम देवी-देवताओं के आगे नत-मस्तक होंगे अपनी सेवा देने को। हम जगमगाती आत्माओं द्वारा उपयोग किया जाना वे अपना भाग्य समझेंगे। लेकिन इस लक्ष्य पर पहुंचने से पहले हमें उन पायदानों पर चलना होगा जिनपर हमें परमात्मा शिव चलाना चाहते हैं। परमात्मा शिव द्वारा बताये उन पायदानों पर चलना बहुत सहज है, सिर्फ अपने भीतर हमने जिस विकार, भ्रम और अज्ञान रूपी अंधकार को पनाह दे रखी है, उसे निकाल बाहर करना होगा। और यदि आप स्वयं में से कुछ निकालने की ज़हमत न करना चाहें तो कुछ स्वयं में जोड़ ही लें। स्वयं में उस ईश्वरीय ज्ञान को जोड़ लें जो आपकी आत्मा को रोशन कर देगा, जिससे आपको उन पायदानों पर चलना आसान हो जायेगा, स्वयं में उस स्वरूप को धारण कर लें जो परमात्मा शिव आपको बनाना चाहते हैं, जिस रूप में वो आपको देखते हैं, शायद इन सबको स्वयं में जोड़ लेने के बाद आपको स्वयं से कुछ निकालने की आवश्यकता ही न पड़े!

तो हे श्रेष्ठ आत्माओं! दीपावली में स्थूल दीये तो जलाओ, परन्तु पहले स्वयं को ऐसी जगमगाती ज्योत बना लो जो आपका जीवन रूपी जहान तो रोशन हो ही, साथ ही जो आपके सानिध्य में आये उसका जीवन भी रोशन हो जाये। यदि ऐसा हो गया तो निश्चित रूप से वो दिन दूर नहीं जब विशेष दीपावली के दिन दीप जलाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी, बल्कि ये सारा संसार हर पल हम जागती ज्योत आत्माओं की रोशनी से ऐसा जगमगा रहा होगा कि ये दीये उस दिव्य प्रकाश के सामने स्वयं को तुच्छ अनुभव करेंगे। ये प्रकृति हमारे दिव्य प्रकाश से प्रकाशित होने को लालायित है, बस देर है तो हमें स्वयं को प्रकाशित करने की....

शांतिवन-आबू रोड। उत्तराखण्ड के पूर्व कैबिनेट मिनिस्टर डॉ. मोहन सिंह रावत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. भूपाल,शांतिवन प्रबंधक। साथ हैं ब्र.कु. मेहरचंद, ब्र.कु. दीपक व ब्र.कु. नारायण।

बुटवल-नेपाल। 'आध्यात्मिक स्नेह मिलन' के पश्चात् समूह चित्र में बोलबम धाम,शैनामैना के प्रमुख आचार्य गुरु किशोर गौतम, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. नारायण तथा अन्य राजनीतिज्ञ, समाजसेवी एवं ब्र.कु. भाई।